

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

१२/१०/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा सतगुरु जी को नमस्ते। परमात्मा सतगुरु जी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप स्थिति में स्थित हो जाएं... सभी अपने मूलस्वरूप को, लाइट के स्वरूप को स्पष्टता से देखें... सभी अपनी लाइट का २० सेकंड के लिए अभी अभ्यास करें...

क्या सभी ने अपने लाइट का अनुभव किया? क्या सभी ने अपने मूलस्वरूप का अनुभव किया? यह जो कुछ सेकंड का या मिनटों का अभ्यास होता है, इसमें सभी आत्माएं कोशिश करें अपने मूलस्वरूप को, सत्य स्वरूप को स्पष्टता से देखने। यही मूलस्वरूप, यही आपका सत्य स्वरूप है; जिसके अंदर मन-बुद्धि-संस्कार, सभी गुण-शक्तियां, सभी दिव्य गुण, सभी पांच तत्वों की ऊर्जा, अष्ट शक्तियां — सब कुछ आप आत्मा के अंदर है। जितना-जितना आप आपके मूलस्वरूप को गहराई से, स्पष्टता से देखते जाओगे, उतना-उतना आपकी सभी गुण-शक्तियां, दिव्य गुण, अष्ट शक्तियां, मन-बुद्धि-संस्कार सभी अपने मूलस्वरूप में आते जाएंगे।

आत्मा ने सतयुग से लेके त्रेता, द्वापर और कलियुग — इतने युगों में पार्ट बजाते-बजाते आत्मा की ऊर्जा बहुत कम हो गयी है। अभी आत्मा संगम पर आयी है। संगमयुग में आत्मा को अपनी ऊर्जा को मूलस्वरूप स्थिति में पहुंचाना होगा, जो कि जब वो जैसे बनी थी, रची थी, उस समय उसकी जो अवस्था थी, उस ओरिजिनल मूलस्वरूप अवस्था में पहुंचना होगा; और संगमयुग में ही आत्मा के अंदर के सभी गुण-शक्तियां, दिव्य गुण, अष्ट शक्तियां, मन-बुद्धि-संस्कार — सभी की ऊर्जा इतने युगों में, आत्मा ने पार्ट बजाकर उसकी ऊर्जा भी समाप्त की है। अब फिर से संगमयुग में इन सभी की ऊर्जाओं को फिर से पूर्ववत करना होगा।

आत्मा की ऊर्जा जितनी मूलस्वरूप अवस्था तक पहुंचेगी, सभी गुण-शक्तियों की ऊर्जा जितनी मूलस्वरूप अवस्था तक पहुंचेगी इस संगमयुग में, उस आधार पर ही अगले कल्प में वह निर्धारित होगा कि वह आत्मा सतयुग में पार्ट बजाने के लिए आएगी, या त्रेता में आएगी, या द्वापर में आएगी, या कलियुग में आएगी। ऐसे नहीं है कि जिनको ज्ञान मिला वो सभी सतयुग में आएंगे, नहीं। सतयुग में जाने की एक नियम-मर्यादाएं हैं, जो आत्मा को उस नियमों में, उस मर्यादा में, उस अवस्था तक पहुंचना होगा। जिस आत्मा की वह अवस्था पहुंचेगी, जो सतयुग में आने के लिए पात्र है, उस ही आत्मा को सतयुग में एंट्री मिल पाएगी।

जो कहते हैं आत्मा की कलाएं होती हैं, सतयुग में १६ कला संपन्न-संपूर्ण होती हैं, वही त्रेता में कला कम, फिर द्वापर में और कम, और कलियुग में कोई कला नहीं बचती। यह कला माना आप आत्मा के जो सभी मन-बुद्धि-संस्कार, गुण-शक्तियां, दिव्य गुण, अष्ट शक्तियां — इन सभी की ऊर्जाएं। यह है आत्मा के अंदर १६ ऊर्जा बिंदु जो कि सभी मन-बुद्धि-संस्कार, गुण-शक्तियों, दिव्य गुणों, अष्ट शक्तियों के मुख्य स्रोत हैं, जो आत्मा के अंदर हैं। आत्मा इन १६ ऊर्जाओं का, सभी गुण-शक्तियां, दिव्य गुणों का स्रोत है। इन सबको मिला के आत्मा है, इसलिए आत्मा को सतयुग में जो अवस्था है, उस आत्मा की अवस्था को कहा जाता है — १६ कला संपन्न-संपूर्ण।

सभी आत्माएं अपनी आत्मा की पढ़ाई करें कि मुझ आत्मा के अंदर यह १६ ऊर्जाएं कहां पर स्थित हैं। जैसे मन है, बुद्धि है, संस्कार है — तो वो आत्मा के अंदर कहां हैं? फिर आत्मा के अंदर शांति है, पवित्रता है, सुख है, प्रेम है, शक्ति है — तो वो कहां पर हैं? आत्मा के अंदर सहनशक्ति है, परखने की शक्ति है, सामना करने की शक्ति है, सहयोग करने की शक्ति है, निर्णय शक्ति है, समाने की शक्ति है, समेटने की शक्ति है — तो वो कहां पर हैं? आत्मा के अंदर नम्रता है, दिव्यता है, अंतर्मुखता है — तो वो कहां पर हैं? आत्मा के अंदर आनंद की ऊर्जा है, तो वो कौन से ऊर्जा स्रोत में है?

हर किसी को अपनी आत्मा की पढ़ाई पढ़ना आवश्यक है। आप सिर्फ कहते हो कि मुझे, मुझ आत्मा को शांति इस गुण को धारण करना है, पर आपको ज्ञात होना चाहिए कि शांति, यह आप आत्मा के अंदर ही है। पर आप आत्मा आपके मूलस्वरूप स्थिति में ना होने के कारण, आप आत्मा के अंदर जो शांति की ऊर्जा है, वह सुप्त अवस्था में बैठी है। आप आत्मा अगर मूलस्वरूप स्थिति में आ जाओगे, अपने आप आपकी शांति की ऊर्जा, शांति की शक्ति अपने मूलस्वरूप में फिर से जागृत हो जाएगी, अपने आप आप आत्मा शांति अनुभव होगी और आपसे सभी को शांति अनुभव होगी। उस ही प्रकार से आत्मा के सभी गुण और शक्तियों के लिए है। इसलिए संगमयुग में आत्मा को अपने मूलस्वरूप, बीज स्वरूप अवस्था में पहुंचना जरूरी है। आत्मा अपनी उस स्थिति में पहुंच गयी, अपने आप सभी गुण और शक्तियां इमर्ज हो जाएंगे।

इस मूलस्वरूप अवस्था में आने की यात्रा में आपकी, आप आत्मा की क्लीनिंग की भी प्रोसेस होती रहेगी। क्योंकि अनेक जन्मों का, अनेक कल्पों का आत्मा के मन-बुद्धि-संस्कारों के अंदर, गुण-शक्तियों के अंदर बहुत कुछ भरा हुआ है। अब आत्मा को रिफ्रेश होना है। जो कुछ भी इतने जन्म पार्ट बजाते-बजाते जो आत्मा के अंदर इकट्ठा हुआ है, वह आत्मा इस संगमयुग में अपने मूलस्वरूप अवस्था में आकर, अपने अंदर का सारा कचरा जो इकट्ठा किया है, वह सारा मुक्त होना, क्लीन होना शुरू होगा। आध्यात्मिक यात्रा माना सबसे पहले क्लीनिंग की प्रोसेस है। इसमें आपके मन-बुद्धि-संस्कारों की क्लीनिंग होगी, आपके हर प्रकार की मानसिक, शारीरिक रूप से क्लीनिंग होगी। क्योंकि आप नए बन रहे हो। आपने जो मार्ग चुना है, मूलस्वरूप अवस्था में पहुंचने का, माना आप जो ओरिजिनल बने थे, रचे गए थे, वैसे आपको फिर से बनना है। तो अभी के आप जो हो, वह आप नहीं रहोगे। क्योंकि अभी के आप जो हो, फिर आंतरिक रूप से हो या बाहरी रूप से हो, आप पुराने हो। आपको नया बनना है। नए बनने के लिए कचरा साफ करना आवश्य होता है। इसलिए आध्यात्मिक यात्रा माना सबसे पहले क्लीनिंग प्रोसेस, वह होना अति आवश्यक है। इस क्लीनिंग में आप पूर्ण रूप से जो कुछ भी आपके अंदर, इतने जन्मों का

इकट्ठा हुआ है ऊर्जा के रूप में, वह सारा साफ होना, फिर इस प्रोसेस से आपको मानसिक तकलीफ भी हो सकती है, शारीरिक तकलीफ भी हो सकती है, पर इस यात्रा को शुरू रखना। क्योंकि यह शुरुआत है, आत्मा को अपने मूल ओरिजिनल स्टेट में पहुंचना है। इसलिए बाकी बातों पर ध्यान ना देते हुए, अपनी आध्यात्मिक यात्रा को करते रहना। परमात्मा की शक्ति सदा साथ है।

जिसको सच्ची दिल से अपने अंदर परिवर्तन करना है, वह परिवर्तित होता ही जाएगा। हर किसी की क्लीनिंग प्रोसेस अलग-अलग हो सकती है, हर किसी का क्लीनिंग प्रोसेस का समय अलग-अलग हो सकता है। यह सब कितना आत्मा के अंदर इकट्ठा हुआ है जन्मों-जन्मों का, कल्पों-कल्पों का, उस पर निर्धारित है कि आप आत्मा की क्लीनिंग प्रोसेस कितने समय में होगी। अगर बहुत ज्यादा इकट्ठा है तो समय लगेगा, पर यह यात्रा शुरू रखनी है। क्योंकि इस यात्रा का एक ही प्रमुख लक्ष्य है कि मुझ आत्मा को संपूर्ण शुद्ध बनना है, जो कि मैं यहां पर ही बन सकती हूँ, इस ही संगमयुग में। इसलिए बिना थके, सभी आत्माएं अपनी आध्यात्मिक यात्रा को करते रहना।

आप आत्माओं का काम है श्रीमत पर चलना, जो परमात्मा की डायरेक्ट श्रीमत है, उस श्रीमत अनुसार चलते रहना। उस हर एक श्रीमत में आपकी परिवर्तन की यात्रा है, आप आत्मा की क्लीनिंग की भी यात्रा है। बस हर कोई सच्ची दिल से अपना संकल्प रखें कि मुझ आत्मा को संपूर्ण शुद्ध इस ही संगमयुग में होना है और शुद्धि करने वाला सिर्फ एक परमात्मा है, परमात्मा की आज्ञा है, परमात्मा की श्रीमत है, परमात्मा की शिक्षा है। आत्मा की शुद्धि के लिए बाकी कोई और रास्ता नहीं है सिवाय परमात्मा के। इसलिए सभी आत्माएं जल्द से जल्द जागृत हो जाएं।

सभी के पास समय अति लिमिटेड है, उस कम समय में आपको बहुत बड़ी यात्रा करनी है। सभी आत्माएं देखें — क्या आपके पास परमात्मा के पास पहुंचने का भाग्य है? आपके पास परमात्मा की श्रीमत पर चलने का भाग्य है? अगर आत्माओं की दिल सच्ची होगी, तो सच में इस संगमयुग में आत्माओं को भाग्य मिल सकता है — परमात्मा के पास पहुंचने का, परमात्मा की श्रीमत पर चलने का।

सभी आत्माएं चेक करें — क्या सच में आप चाहते हो परमात्मा के पास पहुंचकर आप आत्मा की संपूर्ण शुद्धि हो जाए? इस शुद्धि के प्रोसेस में, बाहरी रूप से दिखने में परेशानी और कठिनाई दिखेगी, पर आप आत्मा आत्मिक लेवल पर शुद्ध होती जाएंगी। इस संगमयुग में सभी आत्माओं को परमात्मा के पास पहुंचने का भाग्य मिल सकता है। यह संगमयुग अलग संगमयुग है। इसलिए अगर सच्ची दिल आत्माओं की होगी, तो परमात्मा के पास पहुंचने का भाग्य और परमात्मा की श्रीमत पर चलने का भाग्य, आत्माओं को मिल सकता है। यह इस संगमयुग को स्पेशल वरदान है।

अभी हर कोई आत्मा अपनी सच्ची दिल चेक करे — क्या उसको संपूर्ण शुद्ध होना है? अगर आपकी दिल सच्ची है, तो परमात्मा की शक्ति आपको परमात्मा के पास पहुंचाएगी और परमात्मा की ही शक्ति परमात्मा की श्रीमत पर आपको चलाएगी। कोई भी आत्मा खुद से परमात्मा की श्रीमत पर नहीं चल सकती। श्रीमत पर चलाने वाली शक्ति होती है और वह तब ही आएगी जब आप आत्मा की दिल सच्ची होगी। सच्ची दिल से ही हर प्रकार से परमात्मा की मदद, परमात्मा की शक्ति के रूप में आत्माओं को मिलती है।

इसलिए सभी आत्माएं अपने अंदर झांककर देखना — क्या आपको सच में शुद्ध होना है? आपको संपूर्ण आपका, आप आत्मा का शुद्धिकरण करना है? क्योंकि एक बार यह संगमयुग पूरा हो गया, उसके बाद उस प्रकार से आत्माओं के पास मौका नहीं मिलेगा। इसलिए सभी आत्माएं जागृत हो जाएं और सभी चेक करें — क्या अभी भी आप आत्माओं को आपका समय संसार में गवाना है?

हर कोई चेक करें, अपनी सच्ची दिल को चेक करें — क्या सच में आप आप आत्मा के अंदर परिवर्तन चाहते हो? क्या सच में आपको लगता है कि आपके अंदर जो-जो विपरीत गुण हैं, वह नहीं होने चाहिए? क्या सच में आपको लगता है कि अभी के आप जो हो, अभी की आपकी जो स्थिति है, क्या वह आपको अच्छी लगती है? हर कोई चेक करें — आपको जो अच्छा लगता है, वह आपके साथ सदा रहेगा और आपको सच में जो अच्छा नहीं लगता है, वह आपसे मुक्त हो ही जाएगा, उसके लिए आपको प्रयास

करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। बस आपको सच्चाई से अपने अंदर चेक करना होगा — क्या आपको यह चाहिए, क्या आपको यह नहीं चाहिए? हर कोई अपने से चेक करें।

जब तक आप सत्यता से आपकी खुद की चेकिंग नहीं करोगे, तब तक आपको परमात्मा की शक्ति के रूप में मदद, ताकत नहीं मिल पाएगी। जितनी आपके अंदर सच्ची दिल है, सत्यता है, उतनी ही आपको परमात्मा से शक्ति और ताकत मिल जाएगी और उतने ही आपके अंदर परिवर्तन आएगा। इसलिए सच्चाई, सच्ची दिल — इस गुण को भी चेक करना आपके अंदर वह है या नहीं है और अगर है तो फिर भी कितना है?

हर कोई अपनी आज इस पर चेकिंग करें, वो भी सच्चाई से चेकिंग करें, ऊपर-ऊपर से ना करें। संपूर्ण आत्मा को शुद्ध करने के लिए परमात्मा के पास पहुंचकर, उसकी हर श्रीमत पर चलना ही होगा। सभी आत्माएं इसका अवश्य ध्यान रखें।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः

सभी आत्माएं अपनी दिल को सच्ची बनाना। जितना तेजी से अपनी दिल को सच्ची बनाते जाओगे, उतना जल्दी आपके परिवर्तन के रास्ते खुलते जाएंगे, आपका परमात्मा के पास आपके परिवर्तन के लिए पहुंचने के लिए रास्ते खुलते जाएंगे।